RC. 20 : Leisure and Tourism

Paryatan ka Samajik evam Arthik Prabhav : Ek Vislesan

पर्यटन का समाजिक एवं आर्थिक प्रभाव : एक विश्लेषण

दीपक कुमार
शोध छात्र
समाजशास्त्र विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी

पर्यटन आरम्भ से ही राष्ट्रों के मध्य सामाजिक आदान–प्रदान का महत्वपूर्ण साधन रहा है। परन्तु बदले वैश्विक परिदृश्य में पर्यटन अपेक्षाकृत बड़े सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिप्रेक्ष्य में आता है।

पर्यटन से किसी देश में रहने वाले लोगों के जीवन स्तर तथा रहन–सहन की स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार लाए जाने के साथ ही रोजगार सृजन का भी महत्वपूर्ण कार्य होता है। यही नहीं सामाजिक, क्षेत्रीय, लिंग भेद की असमानताओं को दूर करने की दृष्टि से भी पर्यटन प्रभाव डालता है।

दूसरी ओर पर्यटन के नकारात्मक प्रभाव भी समाज में कम नही होते है। यौन स्वच्छन्दता से होने वाली बीमारियों, भीख माँगने की प्रवृत्ति में बढ़ावा, नशाखोरी, ठगी, और लूट–पाट के साथ ही सामाजिक मूल्यों और सांस्कृतिक परम्पराओं में हो रहे क्षरण को पर्यटन की ही देन कहा जा सकता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में तो लोगो का नजरिया जीनोसेंट्रिक होता जा रहा है। पर्यटन का सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव को शोधार्थी द्वारा विस्तृत तथ्यों को शोध–पत्र में जानने का प्रयास किया जायेगा।

उच्चवर्गीय महिलाओं में अवकाश के उपयोग

–समाजशास्त्रीय अध्ययन

राजश्री इन्दवार, शोध छात्रा

रॉची विश्वविधालय, रॉची।

भूमण्डलीकरण तथा आधुनिकीकरण ने नगरीय जीवनशैली को प्रभावित किया है। विशेषकर महिलाओं की स्व–पहचान तथा आत्म–विश्वास दिलाकर उन्हें आत्म–निर्भर बनााने में विशेष योगदान दिया है। अवकाश के उपयोग हेतु विभिन्न माध्यम व श्रोत की उपलब्धताा में वृधि हो रही हैं। इसी क्रम में ऑरिफलेम,टपरवेयर आदि कुछेक ब्राण्डेड कंपनियॉ अपने उत्पादों के क्रय–विक्रय के लिए उच्चवर्गीय महिलाओं को आकर्षित करती हैं। छोटी–मोटी पार्टियों के आयोजन के साथ सौन्दर्य–प्रसाधनों तथा घरेलु उपयोगी वस्तुओं के क्रय–विक्रय में संलग्न इन महिलाओं के क्रियाकलापों के द्वारा मनोरंजन के साथ खरीददारी करते हुए अवकाश का उपयोग किया जाता है। यह सामाजिक संबधों में मजबुती भी प्रदान करता है।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य इस कार्य क्षेत्र में संलग्न महिलाओं के अवकाश के उपयोग व महत्व को जानना ,संबधित क्रियाकलाप संपन्न करने की गतिविधियों को जानना, इनके आपसी संबधों को जानना तथा इसका समाज व महिलाओं पर प्रभाव को जानना है।

आनुभविक अध्ययन पद्यति पर आधारित प्रस्तुत अध्ययन रॉची शहर के संर्दभ में है,जो राजनीतिक,शैक्षणिक,आर्थिक व सामाजिक महत्व का केन्द्र है ।

अवकाश की ये गतिविधियॉ उच्चवर्गीय महिलाओं में सामाजिक संबंधों को प्रोत्साहित करने का कार्य करती है। इन ब्रांण्डेड कंपनियों ने इन महिलाओं के लिए अवकाश के उपयोग के साथ इनकी स्व–पहचान तथा आत्मर्निभर बनाने में सहायक भूमिका निभाती हैं,जिसके द्वारा इन महिलाओं की पहचान परिवार,समाज में प्ररणाश्रोत के रूप में होती है।

Life Membership No. : 1316

Number and Name of RC :- RC 20, Leisure and Tourism

Subject of Abstract – जनकपुर (नेपाल) – पर्यटन स्थल के रूप में : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

Name of Author - **डॉ० बीरेन्द्र कुमार सिंह**

अध्यक्ष, स्नातकोत्तर समाजशास्त्र विभाग,

बी० आर० ए० बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

जनकपुर नेपाल का प्रसिद्ध धार्मिक एवं पर्यटन स्थल है। यह नगर प्राचीन काल में मिथिला की राजधानी माना जाता था। यह शहर भगवान राम के ससुराल के रूप में तथा सीता माता का जन्म स्थान के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ के प्रसिद्ध राजा जनक थे जो सीता माता के पिता थे। कहा जाता है कि सीता का जन्म मिट्टी के घड़े जनकपुर में ही हुआ था। प्राचीन काल में यह विदेह राज्य की राजधानी थी। विदेह राज्य के संस्थापक मिथि वंश के महाराज सिरध्वज जनक 22वें जनक थे और अयोध्यापति राजा दशरथ के समकालीन थे। रामायण–महाभारत आदि प्राचीन ग्रन्थों में राजा जनक की राजधानी का नाम मिथिला बताया गया है, जनकपुर नहीं। मिथिला नगरी के स्थान पर जनकपुर की ख्याति कैसे बढ़ी और उसे राजा जनक की राजधानी लोग कैसे समझने लगे इस सम्बन्ध में एक अनुश्रूति प्रचलित है। कहा जाता है कि पवित्र जनक वंश का कराल जनक के समय नैतिक अद्यःपतन हो गया। कौटिल्य ने प्रसंगवश अपने अर्थशास्त्र में लिखा है कि कराल जनक ने कामान्ध होकर ब्राह्मण कन्या का अभिगमन किया। इसी कारण वह वन्धु–बंधवों के साथ मारा गया। अश्वघोष ने भी अपने ग्रंथ बुद्ध चरित्र में इसकी पुष्टि की है। कराल जनक के मृत्यु के पश्चात् जनक वंश में जो लोग बच गए वे निकट के तराई के जंगलों मे जा छुपे। जहाँ वे लोग छिपे थे, वह स्थान जनक के वंशजों के रहने के कारण जनकपुर कहलाने लगे।

जनकपुर हिन्दुओं के लिए एक प्रमुख धार्मिक स्थल के रूप में जाना जाता है। इस जनकपुर धाम अर्थात् मिथिला नगरी को तालाबों का शहर भी कहा जाता है। वैसे तो यहाँ दर्जनों तालाब हैं लेकिन उनमें दो मुख्य हैं – गंगा सागर और धुनष सागर। यहाँ छठ पर्व के दौरान बहुत ही मनोरम और मनमोहक दृश्य दिखने को मिलते हैं। इसके साथ ही इस क्षेत्र में कई दर्शनीय स्थल भी हैं जिनमें प्रमुख हैं – राम जानकी मंदिर, नौलखा मंदिर, विवाह मंडप, दूधमती नदी, रत्ना सागर, अनुराग सरोवर तथा सीताकुंड आदि। इस प्रकार जनकपुर केवल नेपाल ही नहीं परन्तु भारत के लिए भी एक प्रमुख धार्मिक एवं ऐतिहासिक शहर है।

अध्ययन का उद्देश्य :– प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य जनकपुर (नेपाल) के अर्न्तगत आने वाली प्रमुख पुरातात्विक एवं पर्यटक स्थलों के बारे में जानकारी प्राप्त करना। इन पर्यटक स्थलों को विश्व पटल पर लाना तथा वैसे स्थल जो पुरातात्विक हैं और उपेक्षित हैं उनके बारे में जानकारी इकट्ठा कर पर्यटन विभाग को सौंपना; क्योंकि यदि पर्यटन की दृष्टिकोण से इस क्षेत्र में ध्यान दिया जाए तो नेपाल का यह प्रमुख स्थान पर्यटक स्थल हो सकते हैं।

सरकारी संकल्प से रांची में पर्यटन का विकास

डॉ मनोज कुमार सिंह, व्याख्याता समाजशास्त्र, संजय गांधी मेमोरियल कॉलेज, रांची

रांची छोटानागपुर के पठार पर बसी झारखण्ड की राजधानी है। खनिज संपदा से समृद्ध झारखण्ड में रांची की प्राकृतिक सुषमा एवं आबोहवा इसे अन्य इलाकों से अलग पहचान देती है। रांची में पर्यटन के विविध क्षेत्र हैं। इसके चालीस किलोमीटर के इलाके में 12 जलप्रपात, इसकी हृदयस्थली में ऐतिहासिक रांची पहाड़ी, सुतियांबे गढ़ में नागवंशी राजाओं का किला,कांके और रुक्का जैसे खूबसूरत पसरे हुए डैम एवं जैविक उद्यान पर्यटकों को बरबस आकर्षित करते हैं। झारखण्ड सरकार ने पर्यटन स्थलों के विकास के लिए एक स्पष्ट रोडमैप तैयार कर विकास की कई योजनाएं शुरू की हैं, जिनकी वजह से राज्य में पर्यटकों की आवाजाही बढ़ी हैं एवं स्थानीय युवकों को रोजगार मिलने का मार्ग भी प्रशस्त हुआ है। सरकार अब सुनियोजित तरीके से पर्यटन के लिए संरचनाएं विकसित कर रही है। चाहे झरने हों या डैम या पर्वत हो या गांव, सभी की अपनी खासियत है। इन्हें पर्यटन के नक्शे पर उतारा जा रहा है।

प्रदेश में पर्यटक स्थलों को विकसित करने के लिए मास्टर प्लान बनाया जा रहा है, जिसमें पर्यटन केंद्रों की विस्तृत रिपोर्ट तैयार की जायेगी। पर्यटक स्थल की स्थिति, सुविधाएं और सुरक्षा जैसे मुद्दों पर रिपोर्ट तैयार की जायेगी। पर्यटकों की जब भीड़ बढ़ेगी तो वहां पर स्थानीय लोगों को रोजगार मिलेगा। इससे वे असामाजिक कार्यों से दूर रहेंगे और उन्हें आर्थिक लाभ भी होगा। पतरातू डैम में वाटर स्पोर्ट्स के जरिये सैलानियों को आकर्षित करने की योजना है, तो घाटी में रेस्टोरेंट और होटल सहित अन्य सुविधाएं विकसित की जा रही हैं। इस घाटी के अलावा हुंडरू फॉल, जोन्हा फॉल और दशम फॉल जैसे स्थल हैं, जहां पर्यटकों के बैठने के लिए शेड बनाया जा रहा है। डेंजर जोन की घेराबंदी जैसे काम कर स्थल को सैलानियों के लिए सुरक्षित बनाया जा रहा है।

एचआईवी पोजीटिव महिलाएं और समाज में उनका अवदान

डॉ राज श्रीवास्तव, व्याख्याता समाजशास्त्र, संजय गांधी मेमोरियल कॉलेज, रांची

झारखण्ड का विष्णुगढ़ किसी जमाने में एड्स कैपिटल के रूप में जाना जाता था। लगभग एक दशक पूर्व तक सिर्फ विष्णुगढ़ में एचआईवी के प्रति माह 60 से अधिक मामले उजागर हुआ करते थे, जिनमें 25–30 महिलाएं होती थीं। यानी कोई पुरुष संक्रमित होता है तो यह निश्चित होता है कि यदि वह शादीशुदा है, तो उसकी पत्नी भी जांच के बाद एचआईवी पोजीटिव निकलेगी। इन महिलाओं का संघर्ष वर्णन के परे होता है। परिवार वाले अज्ञानतावश महिला को ही दोषी समझते हैं। घर, परिवार, समाज में उसके साथ भीषण भेदभाव किया जाता है और उसका जीना दूभर हो जाता है। समाज में होने वाले किसी भी आयोजन में उन्हें निमंत्रित नहीं किया जाता है। एक तरह से उनका सामाजिक बहिष्कार हो जाता है।

लेकिन राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सरकार एवं नाको जैसी संस्थाओं की अनवरत मेहनत से एचआईवी पोजीटिव महिलाओं में जीवन के प्रति एक सकारात्मक नजरिये का विकास देखा जा रहा है। कई ऐसी एचआईवी पोजीटिव महिलाएं हैं, जिन्होंने एचआईवी पीड़ित होने के बावजूद अपनी स्थिति से समझौता कर लिया है और उन्होंने अपना समय समाज में ऐसी पीड़िताओं की काउंसिलिंग, उन्हें एआरटी सेंटर भेजने और उन्हें जागरूक करने में लगा दिया है।

इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण केस स्टडी का वर्णन समीचीन है। गीता कुमारी (बदला हुआ नाम) को सन् 2006 में एचआईवी पोजीटिव होने का पता चला। परिवार वालों ने उन्हें घर से निकाल दिया। समाज में भी उन्हें स्वीकार नहीं किया गया। उन्होंने खुद ही संघर्ष करने एवं अपने जैसी महिलाओं को जागरूक करने का निश्चय किया। वे अब दूसरे गांव में रहती हैं। मेहनत–मजदूरी करती हैं। खाली समय में गांव की पीड़ित महिलाओं को जागरूक करती हैं। उन्हें शारीरिक एवं चिकित्सकीय तथ्यों की जानकारी देती हैं। संक्रमण से बचाव के बारे में जागरूक करती हैं। ऐसी कई महिलाएं अपने जैसी पीड़ित महिलाओं का सहारा बन रही हैं।